International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित धार्मिक प्रतीक : एक संक्षिप्त अवलोकन

धीरेन्द्र सिंह
(शोध छात्र)
प्राचीन इतिहास संस्कृति, एवं पुरातत्त्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविश्वाद्यालय, इलाहाबाद

हर एक मनुष्य, हर एक समाज, हर एक सभ्यता के विचार तथा भाव अलग–अलग होते हैं। विचार तथा प्रतीक का कितना घनिष्ठ सम्बध है यह प्रतीकों के अध्ययन से ही समझा जा सकता है। प्रतीक के सभ्यता का अध्ययन हो सकता हे। इसीलिए एक ही बात के लिए भिन्न सभ्यताओं में भिन्न प्रतीक बन जाते हैं। साधारण सी मिसाल लीजिए। हाथ, पैर, मुँह में गोदना गोदाने की बड़ी पुरानी प्रथा है। जंगली लोगों तथा सभ्य समाज में भी यही प्रथा है। कोई अपने हाथ पर वृक्ष या फूल–पत्ते बनवा लेता है और कोई भगवान का नाम गोदा लेता है। भिन्न जातियों के ऐसे–ऐसे भिन्न प्रतीक इतिहास में भरे पड़े हैं।

प्रतीकों के ऐतिहासिक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्रतीक बहुआयमी है। विभिन्न देशों एवं कालों में विविध प्रतीकों की रचनाएँ की गयी हैं जिनका एक संक्षिप्त बहुआयामी सर्वेक्षण अग्रलिखित पंक्तियों में अवधेय हैः–

वृक्ष प्रतीक

सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में लोक व्याप्ति वृक्ष प्रतीक से अग्रसारित है। तुलसी का पूजन हर हिन्दू घर में होता है। तुलसी के पौधे का स्वास्थ्य तथा मन पर कितना बड़ा प्रभाव पड़ता है, इस सम्बन्ध में आज तक नयी–नयी बाते मालूम हो रही हैं। लोक–पालक विष्णु हैं। आयुर्वेद के आचार्य विष्णु हैं। धन्वन्तरि को विष्णु का अवतार

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

कहते हैं। सैकड़ों रोगों की दवा तथा घर की गन्दी हवा को दूर करने वाला तुलसी का पौधा है। तुलसी का विष्णु से विवाह एक प्रतीक मात्र है। इसी तरह से लोग पीपल के पेड़ में वासुदेव का पूजन करते हैं, वासुदेव अजर और अमर हैं। संसार में पीपल का ही वृक्ष ऐसा है जिसमें कोई रोग नहीं लग सकता, कीड़े प्रत्येक पेड़ में तथा पत्ती में लग सकते हैं, पीपल में नहीं। वट–वृक्ष की दार्शनिक महिमा है। यह उर्ध्व–मूल है। यानी, इसकी जड़ ऊपर शाखा नीचे को आती है। ब्रह्म ऊपर बैठा है। यह सृष्टि उसकी शाखा है। वट–वृक्ष का ब्रह्म का प्रतीक है। इसके पूजन का बड़ा महत्व है। ज्येष्ठ के महीने में हमारे देश में ''वट–सावित्री'' का बड़ा पर्व होता है। इस त्यौहार को अपभ्रंश रूप में हम ''बरगदाई'' कहते हैं। आँवले के सेवन से शरीर का काया–कल्प हो जाता है। आँवले के वृक्ष के नीचे बैठने से फेफड़े का रोग नहीं होता। चमड़े की कोई बीमारी नहीं होती। कार्तिक के महीने में कच्चे आँवले का सेवन तथा आँवले के वृक्ष का स्वास्थ्य के लिए विशेष महत्व है। इसीलिए कार्तिक में आँवले के वृक्ष का पूजन, आँवले के पेड़ के नीचे भोजन करने की बड़ी पुरानी प्रथा हमारे देश में है। कार्तिक शुक्ल पक्ष में धात्री–पूजन का विधान हैं इस पूजन में आजकल आँवले के वृक्ष के नीचे विष्णु का पूजन होता है।

शंकर को बिल्वपत्र चढ़ाते हैं। शंकर ने हलाहल विष का पान किया था। समुद्र–मंथन के समय जहाँ एक ओर अमृत आदि निकले, वहीं हलाहल विष भी निकला। इस विषय की आग, आँच से संसार तप्त हो गया। तब शंकर भगवान ने इसे पी लिया। पर गले के नीचे नहीं उतरने दिया। उनके हृदय में विष्णु का, यानी लोक–रक्षात्मक शक्ति का वास था। उसको मारना नहीं था। अतएव गले में ही विष पड़ा रहा। इसीलिए उनका गला नीला पड़ गया। वे नील–कण्ड हो गय। नीलकण्ड

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

पक्षी को शंकर का प्रतीक मानकर उसका पूजन करना, उसे नमस्कार करना–यह प्रथा भारत में हर कोने में मिलेगी। नीलकंठ पक्षी, नीलकंठ शंकर भगवान का प्रतीक है।

बिल्वपत्र तथा बिल्व वृक्ष का और भी महत्व है। नवरात्र में सप्तमी के दिन बिल्वपत्र में देवी को अभिमंत्रित करना चाहिए। रावण के वध के लिए तथा राम की सहायता के लिए ब्रह्मा ने बिल्ववृक्ष में देवी का आह्वान किया था। बिल्ववृक्ष भगवती का प्रतीक माना जाता है। विजयदशमी की शाम को शमी वृक्ष के पूजन का विधान है। शास्त्रवचन है कि ''शमी पाप की शामक है।'' अर्जुन को, महाभारत में, अस्त्र–शस्त्र शमी ने धारण कराये थे। राम का प्रिय बात शमी ने सुनायी थी। यात्रा को निर्विघ्न बनाने वाली शमी है, अतः पूज्य है। यात्रा के समय यात्री के हाथ में शमी की पत्ती देने की पुरानी परिपाटी हमारे देश में है। गणेश–पूजन में गणेश जी को दूर्वा (दूब) के साथ शमी भी चढ़ाते हैं। कुश की पूजा का काम आता है। विधान है कि अमावस्या की काली रात्रि में, भाद्रपद (भादों) के महीने में कुश उखाड़ना चाहिए (कुशोत्पाटन)। शास्त्र–वचन है कि दर्भ ताजे होने के कारण श्राद्ध के योग्य होते हैं। वैष्णवों के आचार में वट में विष्णु का वास माना गया है। वट को नमस्कार करने का आदेश है। वट–वृक्ष पर चढ़ना मना है। पीपल के लिए तो यहाँ तक लिखा है कि–

कण्डूय पृष्ठंतो गां तु स्नात्वा पिप्पलतर्पणम्।
कृत्वा गोविन्दमभ्यर्च्य न दुर्गतिमावाप्नुयुः।।

(गौ) को पीछे से सहलाकर, फिर स्नान कर पीपल के नीचे भगवान की पूजा करे तो दुर्गति नहीं होती।

सिसली निवासी पीत्रो नामक एक यात्री ने सन् 1623 ई0 में भारत की यात्रा की थी। उसने हारमुज के निकट ईरान के तट पर और भारत में कैम्बे नगर के बाहर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

''बर'' (वट) के वृक्षों की पूजा देखी थी। उसके कथनानुसार भारत में यह वृक्ष महादेव की पत्नी ''पार्वती'' को समर्पित है। वट–सावित्री का जिक्र हम ऊपर कर आये हैं।

चैत्र मास शुक्ल पक्ष, अष्टमी को पुनर्वसु नक्षत्र में जो लोग अशोक की आठ कली को (उसके अर्क को) पीते हैं, उनको कोई शोक नहीं होता। अवश्य इस अशोक–कली का कोई आयुर्वेदिक महत्व होगा जिससे रोग–दोष नष्ट होता होगा।

अशोक कलिकाश्चाष्टौ ये पिबन्ति पुर्नवसौ।
चैत्रमासे सितेऽष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः।।

दौना (दमनक) की पत्तियां कितनी मीठी सुगन्ध देती है। चेत्र मास में अपने इष्ट देवता को दौने की पत्ती चढ़ायी जाती है। दौने की महक से बल–वीर्य भी बढ़ता है। इसीलिए यह ऋषि, गंधर्व आदि को मोहित करने वाला तथा कामदेव की पत्नी रति के मुख से निकले हुए भाप, की सुगन्धि से युक्त कहा जाता है। कहते हैं कि इसमें कामदेव का वास है–

कामभस्मसमुदभूतरति वाष्प परिप्लुतः।
ऋषिगन्धर्वर्दवादि–विमोहक नमोअस्तु ते।।

आम के वृक्ष या आम के फूल को, जिसे मंजरी कहते हैं, पूजन की अनेक विधियां हैं। बसन्त पंचमी के दिन इसका पूजन होता है। चैत्र कृष्ण प्रतिपदा–धुरड्डी के दिन मंजरी–पान का विधान है। हजारों वर्ष पहले वृक्षों की जो महत्ता स्थापित थी वह संसार में सब जगह फैल गयी। मानव हर जगह एक–सा है। उसका एक–सा स्वभाव है। डा0 मेसन ने सत्य ही लिखा है कि ''मानव–जाति हर जगह, हर समय एक समान है। इतिहास का मुख्य उद्देश्य है मानव–स्वभाव के विश्व–व्यापी सामान्य सिद्धान्तों की जानकारी करना।[1] वृक्षों के विषय में भी यह बात है, जार्ज वर्डउड ने

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

वृक्षों की विश्व–व्यापी उपासना के काफी उदाहरण दिये हैं। फ्रान्स में अठारहवीं सदी के मध्य में एक विश्वकोष प्रकाशित हुआ था। पश्चिमी देशों का यह प्रथम विश्वकोष था। इसमें भी वृक्ष सम्बन्धी मानव की श्रद्धा का अच्छा परिचय मिलता है।[2]

स्वर्ग में प्राप्त पारिजात वृक्ष (हर–शृंगार) की बात तो हर एक हिन्दू जानता है। कृष्ण को कदम्ब वृक्ष बड़ा प्यारा था। आज भी कदम्ब का पूजन होता है। हिमालय पर्वत पर कुलू तथा सतलज नदी की घाटियों में देवदारू का वृक्ष पूजनीय है। उसमें देवता का वास कहा जाता है। ग्रेट ब्रिटेन में गेलिक बोली में देवदारू को ''दरक''[3] कहते हैं। उस देश में भी बलूत के वृक्ष की पूजा होती थी। वह पवित्र समझा जाता था। स्वीडन तथा नार्वे में यह वृक्ष अग्नि–देव को बड़ा प्रिय था, इसलिए कि इसकी छाल लाल होती थी। मेक्सिको तथा मध्य अमेरिका में साइप्रस तथा खजूर के वृक्ष बहुत पूजित थे। इनके सामने धूप–दान होता था। रोम में साइप्रस वृक्ष को प्लूटो देवता का प्रतीक तथा खजूर का पेड़ ''विक्टरी'' (विजय) देवता का प्रतीक समझा जाता था।[4]

बोधगया में जिस वृक्ष के नीचे भगवान बृद्ध को ''ज्ञान''–बोधिसत्व'' प्राप्त हुआ था, वह आज तक विश्व के बौद्धों के लिए पूजा की वस्तु है। सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र इसकी एक शाखा लंका के बौद्धों के लिए ले जाना चाहते थे। समस्य यह थी कि वृक्ष की टखनी को चाकू से काट नहीं सकते थे। कथा है कि उसके नीचे सोने की थाली लेकर लोग खड़े हो गये और एक शाखा टूट कर स्व्यं गिर पड़ी। वह शाखा आज लंका में हरी–भरी लहलहा रही है। एक शाखा महाबोधि सोसाइटी द्वारा सारनाथ में लगयी गयी है।[5] जार्ज बर्डउड के कथनानुसार यारकन्द के कालीनों पर तथा भारतवर्ष की दस्तकारी में वृक्षों, पत्तों के बनाने का बड़ा रिवाज था। पीत्रों ने वट

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

के पड़े के तने को सिन्दूर से रंगने का तथा उसे पान के पत्ते की माला पहनाने का जिक्र किया है। स्वीडन की राजधानी में, अजायब घर में एक मिट्टी का बर्तन रखा है जिस पर सूर्य के साथ वृक्ष बना हुआ है। डा0 वर्साये ने इसे ''जीवन का वृक्ष'' साबित किया है।[6] फारस में खास बीमारियों छुटकारा पाने के लिए खास झाड़ियों में चीथड़े बाँधने का रिवाज था। स्वीडन तथा नार्वे में पीपल के पेड़ से मिलता–जुलता एक पेड़ होता है जिसकी आज तक पूजा होती है। लोग गिरजाघर में बड़े दिन में[7] इस पर बियर चढ़ाते हैं। श्रीमती मरे–आंसले का कहना है कि ठीक वैसा ही नृत्य उन्होंने दक्षिण भारत में देखा था। लाल रंग हिन्दुओं का पवित्र रंग है। ''ऐसी प्रतीत होता है कि यह पर्व हमने भारत में सीखा।''[8] बीच में स्तम्भ केवल वृक्ष का प्रतीक है।

वृक्ष ''जीवन'' का प्रतीक है। शाखाएँ जीवन की समस्याएँ है। इसकी उपासना बहुत प्राचीन है। वर्डउड ने लिखा है कि यह अति प्राचीन पूजा है। मिश्र, मेसोपोटामिया, यूनान, रोम सब जगह इसका प्रचलन था।[9] इसाई देशों में अभी भी इसका काफी प्रचार है। 25 मार्च को 'अवर लेडी के'' का त्यौहार, 24 जून को ''सेन्ट जान डे'' का त्यौहार, पहली मई को ''मई दिवस'' का त्यौहार, स्वीडन का 23 जून का त्यौहार, 23 अप्रैल का कोरिन्थिया का ''सेण्ट जार्ज डे'' त्यौहार, हालैण्ड इत्यादि देशों का ऐसा ही त्यौहार और कुछ नहीं, केवल वृक्ष, फूल–पत्ते का त्यौहार है जो हमारे वन महोत्सव से थोड़ा बहुत मिलता–जुलता है।

सूर्य–प्रतीक

सूर्य की उपासना भी, प्राचीन काल में भारत में फैलकर देश–देशान्तर में व्याप्त हो गयी। ''हर सभ्यता तथा संस्कृति प्रतीकों से ओत–प्रोत होती है, निजी व्यवहार व्यक्तिगत व्यवहार भी प्रतीक के ओत–प्रोत होता है।'' भारतीय संस्कृति के साथ सूर्य

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

तथा अन्य देवताओं का प्रतीक चारों ओर फैल गया क्योंकि ''प्रतीक सभ्यता की सबसे बड़ी देन है।'' सूर्य की उपासना को श्रीमती मरे ने प्राचीन अंध–विश्वासों में सबसे प्राचीन माना है। उनके कथनानुसार इस समय वह भारत में प्रचलित है।[10] भारतवर्ष में जिस प्रकार सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजा होते थे, उसी प्रकार पेरू में सूर्य तथा चन्द्र से वंश–परम्परा जोड़ने वाले नरेश होते थे। प्राचीन ईरान में सूर्य की उपासना का बड़ा विधान था। दारा के लड़के अंर्तरक्षीज ने सूर्य की देहधारी प्रतिमा बनवायी थी। इसी नरेश ने बेबिलोन आदि में कामदेवी की प्रतिमा स्थापित करायी थी। अग्नि को सूर्य को प्रतीक मानकर उसकी पूजा होती थी। ईरान में अग्नि पूजक बहुत थे। अग्नि के प्रधान उपासक ''मागी'' लोग थे जो मूर्तिपूजा के घोर विरोधी थे। वे अग्नि प्रज्वलित कर उसका पूजन करते थे। एक यूनानी लेखक ने[11] प्रसिद्ध विजेता ईरानी नरेश द्वारा की युद्ध–यात्रा का वर्णन करते हुए लिखा है कि, नरेश के साथ सूर्य की प्रतिमा चलती थी तथा चाँदी के पात्र में अग्नि प्रज्वलित रहती थी। जार्ज वर्डउड की राय में सूर्य के रथ के बाहर धुरीवाले पहिये की चार धुरियों को लेकर ही स्वस्तिक प्रतीक बना है। थ्रेसिया में मेसेम्ब्रिया नामक एक नगर था। इस शब्द का अर्थ ही है ''दोहपर का सूय''। यहाँ के जो प्राचीन सिक्के मिले हैं उन पर स्वस्तिक बना हुआ है।[12]

कमल, कौड़ी तथा घण्टा प्रतीक

श्रीमती मरे ने वाराणसी के ठठेरी बाजार से एक मूर्ति खरीदी थी। वह वृषभ की मूर्ति थी। उसकी पीठ पर कमल की कली बनी थी। वह कलीा कुछ ऊपर जाकर खुल जाती थी। उसके बीच में एक छोटा–सा अण्डा बना हुआ था। वृषभ के पीछे गेहुँअन साँप बना हुआ था। वह तना खड़ा था– मानों अभी कटाने वाला हो। उसके

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

मुख में एक अंगूठी पड़ी हुई थी जिसमें एक तश्तरी स्थित थी। तश्तरी में एक छेद था। इस छेद से पानी डालने पर कमल के बीच में स्थित अण्ड या लिंग–प्रतीक पर जल गिरता था। श्रीमती मरे ऐंसले के अनुसार कमल के बीच में वह अण्ड प्रतीक ''रत्न'', मुख्य धातु है।[13]

डा0 सम्पूर्णानन्द जी के कथनानुसार आध्यामिक सूर्य में मनरुपी कमल विकसित होता है। आध्यात्मिकता का प्रतीक धर्म है। धर्म का प्रतीक वृषभ है। धर्म से मन को विकसित करने वाला कमल है। कमल के बीच में, मन के बीच में परम तत्व ब्रह्माण्ड का ज्ञान है। अण्ड–प्रतीक ब्रह्माण्ड है। मनरुपी कमल के बीच में परमज्ञानरुपी रत्न ''मणि'' ही वह सार तत्व है जिस पर सब कुछ एकाग्र होकर केन्द्रीयभूत करनाप चाहिए। प्राणरुपी जल को हम वहाँ पर गिराकर उसके प्रति अपनी जागरूकता (जागृति) को प्रकट करते हैं।

मन–कमल के विकसित होने पर उसमें मणिरुपी ज्ञान का बोध होता है। इसीलिए तिब्बत के बौद्धो के उपासना का मंत्र है–

ऊँ मणिपद्मेडहम,

ऊँ की व्याख्या हम कर चुके हैं। ''मैं मनरुपी कमल के बीच में मणि हूँ।''

श्रीमती मरे ऐंसले ने इस मंत्र का अनुवाद इस प्रकार किया है–

''कमल के बीच में मणि को अभिवादन''[14]

किन्तु इतने से ही कमल का अर्थ समझ में नहीं आ सकता। इसके सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न धारणाएं हैं। पं0 बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते का कथन है कि ''कमल'' भारत का सर्वप्रधान पुष्प है। यह सभी जगह उपलब्ध होता है। प्रत्येक भाषा का साहित्य अत्यन्त प्राचीन काल से इसके वर्णनों से भरा पड़ा है। पौराणिक कथा है कि विष्णु ने

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

अपने नेत्र को ही कमल के स्थान पर शंकर भगवान को अर्पित कर दिया था। इस कथा से ही पुष्पों में कमल की प्रतिष्ठा स्पष्ट होती है। पं0 रामचन्द्र शास्त्री तझे के कथनानुसार स्वस्तिक प्रतीक की कमल का पूर्णरूप था। स्वस्तिक से ही कमल प्रतीक बना। ''स्वस्तिक'' से ही कमल प्रतीक बना। ''स्वस्तिक'' पर विचार करते समय हम इस सम्बन्ध पर भी विचार कर लेंगे। तांत्रिक उपासना में ''अष्टदल कमल'', ''द्वादशदल कमल'', ''षोड्शदल कमल'' आदि का प्रायः उपयोग मंत्रों के निर्माण में तथा पूजा पद्वति में मिलता है।

कमल के प्रतीक की एक नहीं, अनगिनत व्याख्याएँ हो सकती है। कमल कीचड़ में पैदा होता है। जल में रहकर भी इसके पत्तों पर जल नहीं टिकता। जल के भीतर कीचड़ से उत्पन्न होने पर भी वह पुष्प जल के ऊपर बना रहता है। यही आदर्श जीवन है। इसी प्रकार कलश भी मंदिरों पर सबसे ऊपर बना मिलेगा। कलश या घट का अर्थ बड़ा सुन्दर है। विद्या, ज्ञान, सृष्टि, देवगण तथा ब्रह्माण्ड (अण्ड) के साथ ही सूर्य तथा चन्द्र का सम्मिलित प्रतीक कलश है। फिर बचा ही क्या? ब्रह्मा, विष्णु, महेश, संसार, सागर, नदियाँ–सब कुछ कलश में सम्मिलित हैं। अतएव कलश प्रतीक बना।

यहाँ पर हम एक दूसरे महत्वपूर्ण प्रतीक का भी उल्लेख कर दें। वह है ''घण्टा'' या घण्टी। हैवेल[15] का कहना है कि यह प्रतीक भारत में ईरान से आया। एक दूसरे विद्वान का कहना है कि लोग जिस ''सुनहले बछड़े'' की पूजा करते था, उसके गले में भी घण्टी के समान चीज क्यों रहती थी? मिस्र में वृषभ देव को ''एटिस'' कहते थे। उनके गले में घण्टी के समान कोई चीज थी।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

हमारे देश में आज भी पूजा के कार्य में कौड़ी का उपयोग केवल प्राचीन मुद्रा के रूप में उपयोग का पता वैदिक साहित्य से भी नहीं लगता। वैदिक साहित्य से हिरण्यहरित यानी स्वर्ण के उपयोग का, उसकी जानकारी का पता चलता है, कौड़ी का नहीं। वैदिक युग में सिक्के के स्थान पर जानवर के, 'पशुधन' के उपयोग की कल्पना तो होती है। यूनानी सभ्यता के आदिकाल में भी पशुधन का ही मुद्रा के रूप में उपयोग होता था। मुद्रा के लिए उनके शब्द का आधार भी, अर्थ भी 'पशु' है।

कौड़ी का उपयोग आज से एक हजार वर्ष पहले मुद्रा के रूप में होता था। अतः जिस प्रकार हमारे यहाँ कौड़ी की माला, कौड़ी का गहना तथा द्रव्य के रूप में, लक्ष्मी के प्रतीक कौड़ी के पूजन की प्रथा है, उसी प्रकार अन्य देशों में, चाहे मिश्र हो या कोई एशियाई देश, कौड़ी का उपयोग द्रव्य तथा शृंगार के लिए होता था। उसे अनायास स्त्री की योनि का प्रतीक मान लिया गया है। श्रीमती मरे ऐंसले ने भी कौड़ी के उपयोग का गलत अर्थ लगाया है। सम्भवतः सर्वप्रथम गणना के साधन के लिए कौड़ियों का उपयोग हुआ होगा। समुद्रतीर–निवासी आर्यों की जब आवश्यकताएं बढ़ी तब से कौड़ी का प्रयोग आरम्भ हुआ होगा, क्योंकि यह समुद्र से ही प्राप्त होती थी। प्रयुक्त होते–होते मुद्राओं की प्राथमिक प्रतिनिधि कौड़ियाँ बन गयी। कुछ समय बाद कतिपय कौड़ियों से गणना आरम्भ कर पैसा आदि मुद्राएँ बनी होगी। हमारी प्राचीन मुद्रा 'पण' तथा 'निष्क' का उपभोग तथा कौड़ियों से इनका सम्बन्ध भास्कराचार्य की 'लीलावती' से अकाट्य रूप से सिद्ध हो जाता है।

स्वस्तिक प्रतीक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

श्रीमती मरे ऐंसलेने अपनी पुस्तक मे ंस्वस्तिक प्रतीक पर एक अध्याय ही लिखा है। जार्ज वर्डउड ने यूनानी 'क्रास' को बौद्धों के धर्म (पहिया) को तथा ंस्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना है। उनका कहना है कि यह अत्यधिक पुराना प्रतीक है। डा0 विल्सन ने अपनी रिपोर्ट में ंस्वस्तिक की बड़ी भ्रमपूर्ण व्याख्या की है। वैदिक यज्ञों में इस सम्बन्ध में, अग्नि को उत्पन्न करने का पूरा कर्मकाण्ड है। चूँकि 'अरणी' के दोनों तरफ लकड़ियाँ लगाकर अग्नि का मंथन होता है, अतएव ंस्वस्तिक उसी क्रिया का प्रतीक है। डा0 विल्सन के इस विचार की पुष्टि में श्रीमती मरे ने टाइलर की पुस्तक[19] का हवाला दिया है कि एस्किमों लोग भी इसी क्रिया से आग पैदा करते हैं। उनका तात्पर्य यह है कि आग पैदा करने की यह प्रथा इतनी प्राचीन है कि यह यूरोप–एशिया हर जगह विद्यमान थी। अतएव ंस्वस्तिक प्रतीक का इसी प्रथा से प्रारम्भ होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। किन्तु, 'अग्नि–संचार' की क्रिया के कारण ही विश्वव्यापी बौद्ध, अरब के मुस्लिम[20] तथा चीन–जापान के लोग इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं। क्या स्वीडन–नार्वे में इन्द्र समान 'थोर' देवता का प्रतीक भी इसीलिए बना था ? तिब्बत के लामाओं के निवास स्थान तथा मंदिरों में ंस्वस्तिक बना है। हिन्देशिया, जावा, सुमात्रा, कम्बोज देशे (कम्बोडिया), चीन, जापान, मैक्सिको तक में ंस्वस्तिक वर्तमान है। जैनी लोग सातवे तीर्थकर सुपार्श्वनाथ का प्रतीक मानते हैं। ''स्वर्गीय ई0 थामस[21] की यह खोज सही है कि ंस्वस्तिक गतिशील सूर्य का प्रतीक है। सूर्य के रथ के पहिये, जिनमें धुरिया बनी हुई हैं, उनका प्रतीक ंस्वस्तिक है।'' उसी पत्र में मैक्समूलर लिखते हैं कि पर्सी गार्डनर की यह खोज भी सही है कि प्राचीन काल का यूनानी नगर मेसेम्ब्रिया से प्राप्त सिक्कों पर जो कुछ लिखा हुआ है वह निश्चित रूप से यूनानी लिपि में ंस्वस्तिक का बोध कराता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

निश्चयतः यह ंस्वस्तिक है। अनेक रूपों में ंस्वस्तिक हर देश में प्रचलित था तथा उसका निरन्तर उपयोग होता था। इग्लैण्ड में इसका सैकड़ों वर्ष पूर्व रूप प्राप्त था। डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन हर एक देश से प्राप्त स्वस्तिक प्रतीक का रूप भिन्न–भिन्न हो गया। स्वीडन में तो उसका रूप था। इसाई गिरजाघरों में भी स्वस्तिक का प्रयोग होता था। किन्तु ईसाई स्वस्तिक को, जिसे आर्य प्रतीक मानकर हिटलर ने अपनी नाजी दल का प्रतीक बनाया था। उसमें तथा भारतीय, बौद्ध, जैन प्रतीक में बड़ा भारी अन्तर यह है कि भारतीय स्वस्तिक दायें से बायें चलता है और ईसाई स्वस्तिक बायें से दायें। भारतीय प्रतीक पूर्व में (दायें) चलता है। इस सम्बन्ध में यूरोपीय विद्वानों ने अनेक कारण बतलाये हैं। कश्मीर की एक मस्जिद पर जो स्वस्तिक है–यह मस्जिद जहाँगीर के शासनकाल में (1605–1628 ई0) में बनी थी। हिन्दू स्वस्तिक के समान है। यारकन्द आदि में स्वस्तिक प्राप्त हुए हैं वे चीनी स्वस्तिक के समान है, जो काफी मोटी पंक्तियों में है, पर भारतीय स्वस्तिक की तरह दायें से बायें हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त साक्ष्यों के आधार पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि मुद्राओं पर अंकित भिन्न प्रतीक धार्मिक प्रतीक के थे जिन्हें समाज में धार्मिक मान्यता प्राप्त थी।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **Dr. S.F. Mason "A History of the sciences"- Routledge and Keg in Paul Ltd., London- Page 259**
2. **French " Encyclopedia"- 1751-1777**
3. **Darack.**
4. **Symbolism of the East and West -Page 113.**
5. **Piertro Della Valle.**
6. **Kamer Hou Dr. Vorsaae.**
7. **Panish of Sognedal, in the diocese of Bergen.**
8. **Symbolism of the East and West, Page 123**
9. जार्ज बर्डउड की भूमिका में, पृष्ठ 19
10. **Mrs. Murray-Aunsely- Page 145**
11. **Quintus Curtius.**
12. **Murray's Symbolism- Page 16**
13. श्रीमती मरे की पुस्तक, पृष्ठ 99
14. श्रीमती मरे की पुस्तक, पृष्ठ 97
15. **Havell.**
16. **W.J. Perry- "Origin of Magic and Religion."**
17. **Symbolism of the East and West- Page 18**

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
Septmber 2017

18. यज्ञों में, वैदिक अनुशासन के अनुसार आग पैदा करने के लिए अस्वत्थ (पीपल) तथा शमी की लकड़ी श्रेष्ठ समझी जाती थी।

19. **Tylor- Early History of Mankind.**

20. कश्मीर से कुछ मील दूरी पर एक मस्जिद पर स्वस्तिक बना हुआ है।

21. **E. Thoms.-"Numismatic Chronicle"- 1860, Vol. XX-Page 18-43**